अध्याय चतुर्थ

अध्याय-चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण, परिणाम एवं व्याख्या

संग्रहित प्रदत्तों का विश्लेषण सारणीयन तथा प्रस्तुतीकरण आदि अनुसंधान कार्य का महत्वपूर्ण अंग है, जिसे प्रस्तुत किये बिना शोधकार्य को विधिवत् प्रस्तुत करना संभव नहीं है।

प्रस्तुत अध्याय में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के प्रमुख स्त्रोत प्राचार्य, प्रशिक्षक, प्रशिक्षणार्थियों को दी गई प्रश्नावली के द्वारा प्राप्त प्रदत्तों की जानकारी का विस्तृत विश्लेषण किया गया है तथा प्राप्त विश्लेषण के आधार पर परिणामो की विस्तृत व्याख्या की गई है।

4.1 प्रदत्तों का सारणीयन एवं विश्लेषण

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान निर्देशिका (डाइट गाइड लाइन) 1989 एवं राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) 2005 के कार्यक्रमों को आधार मानकर प्राप्त प्रदत्तो का सारणीयन किया गया हैं, वर्तमान में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में जो कार्यक्रम चल रहे है, उनका विधिवत अधययन किया गया तथा यथार्थ में जिन कार्यक्रमो को होना चाहिये, उस स्थिति को प्रदत्तो के सारणीयन के द्वारा समझाया गया है। तथा प्रदत्तो को सारणीयन के द्वारा विश्लेषण किया गया हैं तथा प्राप्त विश्लेषणो के आधार पर परिणामो की विस्तृत व्याख्या की गई हैं।

4.2 प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमो का प्राचार्यो द्वारा प्राप्त प्रदत्तो का विश्लेषण

तालिका-1

प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की भूमिका

1	शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु प्रयास/क्रियान्वयन।
2	प्रभावी शिक्षण एवं प्रशिक्षण रणनीति/कार्ययोजना।
3	विषयवार प्रशिक्षण (टी.एल.एम.) द्वारा।
4	प्राथमिक शिक्षा के स्तर का उन्नयन।
5	शा. शालाओं की मानेटरिंग कर रचनात्मक सुझाव देना।
6	आवश्यकतानुसार सेवानिवृत्त विषय विशेषज्ञो को प्रशिक्षक बनाना।
7	शिक्षण विधि को गतिविधि आधारित बनाना।
8	सतत मूल्यांकन।
9	कठिनाई स्तर पर रेमीडियल टीचिंग।

तालिका–1 में यह स्पष्ट किया है कि प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु कई प्रयास किये जाते है, जैसे प्रभावी शिक्षण एवं रणनीति/कार्ययोजना बनाकर उसका कियान्वयन, विषयवार शिक्षक प्रशिक्षण शालाओं की मानेटरिंग कर सुझाव, विषय विशेषज्ञों की सहायता लेना, गतिविधि आधारित शिक्षण विधि के समान ही सतत मूल्यांकन कर कठिनाई स्तर के आधार पर रेमिडियल शिक्षण की व्यवस्था की जाती हैं।

तालिका–2

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम की आवश्यकता

1	सृजनात्मकता हेतु।
2	शिक्षा विधि सरल एवं आकर्षक बनाने के लिये।
3	शिक्षक के ज्ञान में सतत् वृद्धि के लिये।
4	नवाचारों से परिचित कराने एवं नवाचार करने हेतु प्रेरित करना।
5	मूल्यांकन की विधियों से परिचित कराना।
6	उपचारात्मक शिक्षण में महत्व से परिचित कराकर उसके उपयोग हेतु प्रेरित करना।
7	शिक्षको को शिक्षण कार्य में दक्ष करने के लिये।
8	विषयवस्तु अनुरूप टी.एल.एम का चयन एवं निर्माण तथा उसके उपयोग करने की दक्षता।

तालिका–2 में प्राचार्यो द्वारा प्रशिक्षण संस्थानों में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमो की आवश्यकता को बताया गया है, जिसमें शिक्षक में सृजनात्मकता हेतु, शिक्षा विधि को सरल एवं आकर्षक बनाने हेतु, शिक्षक के ज्ञान में सतत् वृद्धि करने के लिये, नवाचारो से परिचित कराने एवं नवाचार करने हेतु प्रेरित करने हेतु, मूल्यांकन की विधियों से परिचित कराने हेतु, उपचारात्मक शिक्षण में महत्व से परिचित कराकर उसके उपयोग हेतु प्रेरित करना, शिक्षको को शिक्षण कार्य में दक्ष करने के लिये, विषयवस्तु अनुरूप टी.एल.एम का चयन एवं निर्माण तथा उसके उपयोग करने की दक्षता से अवगत कराना आवश्यक हैं, क्योंकि शिक्षको के गुणात्मक स्तर के विकास के लिये प्रशिक्षण संस्थानों में बहुत से नये–नये प्रकार के कार्यक्रम संचालित किये जाते है, जिनसे शिक्षको का समुचित विकास हो सके।

तालिका–3

प्रशिक्षण कार्यक्रम को प्रभावी बनाने के उपाय

1	शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की सुविधाओं को ध्यान में रखकर प्रशिक्षण देना।
2	मॉनेटरिंग एजेन्सियों के विषय विशेषज्ञों को सम्मिलित किया जाये।
3	संस्थान में योग्य अनुभव वन मानव मूल्यों को समझने वाले शिक्षकों को रखा जाये।
4	आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण होना चाहिये।
5	शैक्षिक संग्रहण जैसे– लाइब्रेरी, शिक्षण सहायता सामग्री उपलब्ध हो।
6	सहा. शिक्षण सामग्री का निर्माण (टी.एल.एम.)।
7	आदर्श पाठ प्रस्तुतीकरण।
8	कार्ययोजना की रूपरेखा एवं समय विभाजन।

तालिका–3 में प्रशिक्षण कार्यक्रम को प्रभावी बनाने के उपायो को स्पष्ट किया गया है जिसमें प्रशिक्षणार्थियों की रूचियो को ध्यान में रखकर प्रशिक्षण दिया जाता हैं, मॉनेटरिंग एजेन्सियों के विषय विशेषज्ञो को सम्मिलित किया जाता हैं, संस्थान में योग्य अनुभवी मानव मूल्यो को समझने वाले शिक्षको को रखा जाता हैं, आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण होना चाहिये, सहा. शिक्षण सामग्री का निर्माण (टी.एल.एम.), आदर्श पाठ प्रस्तुतीकरण कराकर, कार्ययोजना की रूपरेखा एवं समय विभाजन करके शिक्षक – प्रशिक्षण कार्यक्रम को प्रभावी बनाया जा सकता हैं।

तालिका–4

प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रवेश तथा वार्षिक परीक्षा एवं वर्ष में औसत कक्षाओ की स्थिति

क्र	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, के नाम	प्रशिक्षण कार्यक्रम	कक्षाओं की औसत संख्या	डाइट गाइड लाइन के अनुसार
1	जबलपुर	प्रवेश– माह जुलाई तथा अगस्त परीक्षा– माह जून	218 दिन	220 दिन कक्षाओं की औसत संख्या
2	भोपाल	प्रवेश– जुलाई से सितम्बर के बीच वार्षिक परीक्षा– जून	220 दिन	
3	सीहोर	प्रवेश– जुलाई अगस्त वार्षिक परीक्षा– जून	240 दिन	
4	बालाधाट	प्रवेश– जुलाई वार्षिक परीक्षा– जून के तृतीय सप्ताह में	0	
5	सिवनी	प्रवेश– जुलाई वार्षिक परीक्षा– जून माह में	220 दिन	

तालिका–4 में यह स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षण संस्थानों में प्रवेश जुलाई एवं अगस्त में होता हैं, तथा वार्षिक परीक्षा जून में करायी जाती हैं एवं प्रशिक्षण संस्थानों में कक्षाओ की औसत संख्या 218 से

240 हैं। जो डाइट गाइड लाइन की औसत कक्षाओं की संख्या 220 के आसपास ही आती हैं, अतः यह कहा जा सकता हैं, कि प्रशिक्षण संस्थानों में प्रवेश तथा वार्षिक परीक्षा एवं वर्ष में औसत कक्षाओ की स्थिति डाइट गाइड लाइन के अनुसार ही हैं।

तालिका–5

प्रशिक्षण कार्यक्रम हेतु चयनित प्रवेशरत प्रशिक्षणार्थियो के संवर्गो की स्थिति

क्र	प्रशिक्षण संस्थानों मैं प्रशिक्षणार्थियो के संवर्गो की स्थिति	डाइट गाइड लाइन के अनुसार विभिन्न प्रशिक्षणार्थियो के संवर्गो की स्थिति
1	अनुसूचित जाति।	अनुसूचित जाति।
2	अनुसूचित जनजाति।	अनुसूचित जनजाति।
3	पिछड़ा वर्ग।	पिछड़ा वर्ग।
4	महिला ।	महिला ।
5	अन्य।	अल्पसंख्यक।
6		विकलांग।
7		बाल श्रमिक।

तालिका–5 में यह स्पष्ट किया है, कि विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों में अनुसूचित जाति/जनजाति, पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक, विकलांग, बाल श्रमिक, बालिका एवं महिला आदि का संवर्गो के आधार पर ही प्रवेशरत प्रशिक्षणार्थियों के रूप में चयन किया जाता हैं। डाइट गाइड लाइन के अनुसार विभिन्न जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में प्रवेश के समय विभिन्न संवर्गो को ध्यान में रखकर ही प्रशिक्षणार्थियों को प्रवेश दिया जाता है।

तालिका – 6

प्रशिक्षण कार्यक्रमों को बेहतर बनाने हेतु सुझाव

1	प्री. टेस्ट एवं पोस्ट टेस्ट का विश्लेषण करवाकर प्रतिवेदन लिये जाते है।
2	शिक्षक प्रोफाइल का भी विश्लेषण करवाया जाता हैं।
3	प्रशिक्षणार्थियों से प्राप्त फीडबैक का भी विश्लेषण करवाया जाता है।
4	बैठक सी.डी. से अच्छे मॉडल लेखन का प्रदर्शन, सबकी सहभागिता वर्कशॉप।
5	विषय विशेषज्ञ सेवानिवृत्त की सेवा लेते है।

तालिका–6 में प्रशिक्षण संस्थानों में प्राथमिक शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम को बेहतर बनाने हेतु सुझावो को स्पष्ट किया है जिसमें प्रशिक्षण कार्यक्रमो के पहले प्रशिक्षणार्थियो के प्री. टेस्ट एवं पोस्ट टेस्ट लिये जाते है, शिक्षक प्रोफाइल का भी विश्लेषण किया जाता हैं, प्रशिक्षणार्थियों से प्राप्त फीडबैक का भी विश्लेषण किया जाता है, बैठक सी.डी. से अच्छे मॉडल लेखन का प्रदर्शन, सबकी सहभागिता वर्कशॉप में शामिल

कि जाती हैं, विषय विशेषज्ञ सेवानिवृत्त की सेवाएँ ली जाती है, तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों को बेहतर बनाया जा सकता है जिनका उद्देश्य शिक्षको का उत्तम विकास हो सके तथा उनका शिक्षण प्रभावकारी हो सके।

तालिका – 7

व्यवस्तकाल में प्रशिक्षको की अनुपस्थिति में अध्यापन कार्य

1	अन्य शिक्षको द्वारा।
2	ब्लॉक मास्टर ट्रेनर्स से सहयोग द्वारा।
3	कार्ययोजना आधारित प्रदत्त सामग्री।
4	मानदेय देकर विषय विशेषज्ञ–सेवानिवृत्त द्वारा।

उपरोक्त तालिका में प्राचार्यो द्वारा यह स्पष्टीकरण किया गया है, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के व्यस्तकाल में प्रशिक्षको की अनुपस्थिति में अध्यापन कार्य – अन्य शिक्षको द्वारा कराया जाता है, ब्लॉक मास्टर ट्रेनर्स से सहयोग द्वारा पूरा किया जाता हैं, कार्ययोजना आधारित प्रदत्त सामग्री द्वारा पूर्ण किया जाता है, मानदेय देकर विषय विशेषज्ञ–सेवानिवृत्त द्वारा संपन्न कराया जाता है जिससे प्रशिक्षणार्थियो का अध्यापन कार्य होता रहे।

तालिका–8

विभिन्न कार्यक्रमो के निरीक्षण का विवरण

1	प्रत्येक प्रशिक्षक स्वयं पढ़ाते है।
2	मानेटरिंग में निरीक्षण करना।
3	योजना बनाकर व प्रतिनिधि द्वारा ।
4	लिखित रिकार्ड देखकर।
5	प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित होकर।
6	टीम बनाकर।
7	प्रशिक्षकों की मीटिंग ले कर।
8	प्रशिक्षणार्थियो से अलग से चर्चा कर।
9	स्वयं अवलोकन कर।

तालिका–8 में प्रशिक्षण संस्थानों के प्राचार्यो द्वारा विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमो के निरीक्षण का विवरण स्पष्ट किया गया हैं, प्रत्येक प्रशिक्षक स्वयं पढ़ा रहे है या नही ,मानेटरिंग द्वारा निरीक्षण करना, योजना बनाकर व प्रतिनिधि द्वारा निरीक्षण कार्य करवाना, लिखित रिकार्ड को देखकर, प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित

होकर या अपनी एक टीम बनाकर, प्रशिक्षको की मीटिंग ले कर, प्रशिक्षणार्थियो से अलग से चर्चा करके, स्वयं अवलोकन करके, अतः प्राचार्य द्वारा विभिन्न जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में चलने वाले कार्यक्रमो का निरीक्षण किया जाता है।

तालिका–9

प्रशिक्षणार्थीयों से सम्पर्क

1	कक्षा में उनके बीच जाकर।
2	प्रतिभागियों से साक्षात्कार ले कर।
3	विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं के दौरान।
4	प्रत्यक्ष रूप से।
5	पत्र व्यवहार से।
6	दूरभाष से।
7	आवास स्थल में उपस्थिति दे कर।
8	दोनों समय भोजन के समय।
9	प्रशिक्षण प्रारंभ होने के प्रथम दिवस प्रशिक्षणार्थियों से समूह चर्चा कर।

उपरोक्त तालिका में प्राचार्य द्वारा प्रशिक्षणार्थीयो से सम्पर्क कक्षा में उनके बीच जाकर, प्रशिक्षण संस्थानों में होने वाली पाठ्य सहगामी क्रियाओ के दौरान एवं उनसे प्रत्यक्ष संपर्क करके, उनसे पत्र व्यवहार द्वारा, दूरभाष से उनके घर जाकर, भोजन के समय तथा प्रशिक्षण प्रारंभ होने के प्रथम दिवस से ही प्रशिक्षणार्थीयो से समूह चर्चा कर संपर्क स्थापित किया जा सकता हैं।

4.3 सेवाकालीन प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमो का प्रशिक्षको से प्राप्त प्रदत्तो का विश्लेषण

D- 237

तालिका–1

सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माह एवं अवधि

क्र	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, के नाम	माह मई –जून	अवधि 20 दिन	डाइट गाइड लाइन के अनुसार
1	भोपाल	√	√	अवधि 20 दिन
2	जबलपुर	√	√	
3	सीहोर	√	√	
4	बालाघाट	√	√	
5	सिवनी	√	√	

तालिका–1 में यह स्पष्ट किया गया है कि विभिन्न जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन डाइट गाइड लाइन के अनुसार ही किया जाता है अर्थात् मई–जून माह में उन्हें 20 दिन का ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण दिया जाता है।

तालिका–2

सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिये शिक्षको के चयन का आधार

1	सभी शिक्षको को विशेषतः उनके ग्रेड के अनुसार (ए बी सी डी)।
2	आवश्यकता आधारित।
3	अनिवार्य सेवाकालीन प्रशिक्षण।
4	शिक्षा विभाग द्वारा एवं आदिवासी अनुसूचित जाति विभाग द्वारा शिक्षको की सूची द्वारा।

उपरोक्त तालिका के अनुसार सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिये शिक्षको का चयन विभिन्न आधारो पर किया जाता है, जैसे शिक्षको को विशेषतः उनके ग्रेड के अनुसार (ए बी सी डी) के अनुसार चुना जाता है, सेवाकालीन प्रशिक्षण शिक्षको कि आवश्यकता पर आधारित होता है, शिक्षा विभाग द्वारा एवं आदिवासी अनुसूचित जाति विभाग द्वारा शिक्षको की सूची जारी कि जाती हैं, यह सूची जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानो में भेजी जाती हैं, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानो में सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिये शिक्षको का चयन इन्ही माध्यमों से किया जाता हैं।

तालिका–3

शिक्षको के सेवाकालीन प्रशिक्षण प्राप्त कर लेने की व्यवस्था

क	प्रशिक्षण संस्थानो में सभी शिक्षको के सेवाकालीन प्रशिक्षण की व्यवस्था	डाइट गाइड लाइन के अनुसार सभी शिक्षको के सेवाकालीन प्रशिक्षण की व्यवस्था	एन सी टी ई के अनुसार सभी शिक्षको के सेवाकालीन शिक्षण की व्यवस्था
1	सेवाकालीन प्रशिक्षण के अतिरिक्त प्रशिक्षण।	पत्राचार के माध्यम से।	राष्ट्रीय स्तर पर।
2	पत्राचार के माध्यम से।	ऑपरेशन क्वालिटी के माध्यम से।	राज्य स्तर पर।
3	ऑपरेशन क्वालिटी के माध्यम से।	ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण विकास खंड/स्थानीय स्तर।	जिला स्तर पर।
4	ग्रीष्मकालीन अवकाश विकास खंड/स्थानीय स्तर पर।		
5	प्रशिक्षण दो –तीन चरणों में आयोजित किया जाये।		
6	छात्रावास की व्यवस्था की जाये।		
7	भोजन की व्यवस्था की जाये।		

तालिका–3 में विभिन्न जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में सभी शिक्षको के सेवाकालीन प्रशिक्षण प्राप्त करने का विवरण दिया हुआ है, तथा डाइट गाइड लाइन एवं एन.सी.टी.ई. के अनुसार सभी शिक्षको के सेवाकालीन प्रशिक्षण की व्यवस्था के बारे मे बताया है, कि सेवाकालीन प्रशिक्षण के अतिरिक्त प्रशिक्षण उन्हे दिया जाता है, पत्राचार के माध्यम से भी सेवाकालीन प्रशिक्षण दिया जाता है, ऑपरेशन क्वालिटी के माध्यम से, ग्रीष्मकालीन अवकाश विकास खंड/स्थानीय स्तर पर, प्रशिक्षण दो –तीन चरणो में आयोजित किया जाता हैं, छात्रावास की व्यवस्था की जाती, जिससे सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रशिक्षण संस्थानो मे दिया जाता है।

तालिका–4

सेवाकालीन प्रशिक्षण

1	मास्टर ट्रेनर्स द्वारा।
2	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा।
3	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के अकादमिक सदस्यों द्वारा।
4	जिला स्तरीय स्त्रोत समूह द्वारा।
5	विषय विशेषज्ञ व्याख्याताओं द्वारा।

तालिका–4 में प्रशिक्षण संस्थानों में सभी शिक्षको को सेवाकालीन प्रशिक्षण देने का विवरण दिया है, जिसमें प्रशिक्षण अवधि के दौरान शिक्षको को सेवाकालीन प्रशिक्षण मास्टर ट्रेनर्स द्वारा, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के अकादमिक सदस्यों द्वारा, जिला स्तरीय स्त्रोत समूह द्वारा, विषय विशेषज्ञ व्याख्याताओ द्वारा, दिया जाता है

तालिका–5

सेवाकालीन प्रशिक्षण की स्थिति

1	आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण।
2	प्रशिक्षण हेतु चयन में वर्षो का आधार नहीं रहता है।

तालिका–5 में प्रशिक्षण संस्थानों में सभी शिक्षको के सेवाकालीन प्रशिक्षण देने के पश्चात की स्थिति का विवरण दिया है, जिसमे सेवाकालीन प्रशिक्षण उनकी आवश्यकता पर आधारित होता हैं तथा उनके दुबारा प्रशिक्षण के लिये वर्षो का आधार नहीं रखा जाता हैं। डाइट गाइड लाइन के अनुसार सेवाकालीन प्रशिक्षण देने के पश्चात् प्रशिक्षण की स्थिति आवश्यकता आधारित होती है और वर्तमान समय में प्रतिवर्ष सेवाकालीन प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

तालिका–6

सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम में विद्यालयीन विषयों की स्थिति

क्र.	प्रारंभिक स्तर पर	माध्यमिक स्तर पर	डाइट गाइड लाइन के अनुसार सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम में विषयों की स्थिति	एन.सी.टी.ई के अनुसार सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम में विषयों की स्थिति
1	भाषा	भाषा	भाषा	भाषा
2	गणित	गणित	गणित	गणित
3	पर्यावरण विज्ञान	विज्ञान	विज्ञान	विज्ञान
4	अंग्रेजी	सामा. विज्ञान	सामा. विज्ञान	सामा. विज्ञान
5	उर्दु	अंग्रेजी	अंग्रेजी	अंग्रेजी
6		उर्दु	उर्दु	

तालिका–6 में विभिन्न जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम में विद्यालयीन विषयो की स्थिति का विवरण दिया हुआ है, तथा डाइट गाइड लाइन एवं एन. सी. टी. ई. के अनुसार जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान विषयो की स्थिति दी हुई, जिनका सम्मिलित रूप से उपयोग विभिन्न जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में किया जा रहा हैं, सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान विभिन्न विषयो जैसे भाषा, गणित, विज्ञान, सामा. विज्ञान, अंग्रेजी, उर्दु, आदि विद्यालयीन विषयो का अध्ययन कराया जाता है।

तालिका–7

सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के विभिन्न स्तर

क्र.	प्रशिक्षण में संस्थानो के अनुसार सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के विभिन्न स्तर	डाइट गाइड लाइन के अनुसार सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के विभिन्न स्तर	एन. सी. टी. ई. के अनुसार सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के विभिन्न स्तर
1	जिला।	जिला।	राष्ट्रीय स्तर पर।
2	विकास खंड।	विकास खंड।	राज्य स्तर पर।
3	जन शिक्षा केन्द्र।	जन शिक्षा केन्द्र।	जिला स्तर पर।
4	संकुल स्तर पर।	संकुल स्तर पर।	

तालिका–7 में वर्तमान में विभिन्न जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण में संस्थानों में सेवाकालीन प्रशिक्षण देने के विभिन्न स्तरों का विवरण दिया है, तथा डाइट गाइड लाइन एवं एन. सी. टी. ई. के अनुसार सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम विभिन्न जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण में संस्थानों में अलग–अलग स्तरो पर होता है जैसे – जिला, विकास खंड, जन शिक्षा केन्द्र, संकुल स्तर पर, राष्ट्रीय स्तर पर, राज्य स्तर पर सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम विभिन्न जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण में संस्थानों में लागू किया जाता है।

तालिका– 8

सेवाकालीन प्रशिक्षण का माध्यम

क	भाषा	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण में संस्थान संख्या
1	हिन्दी भाषा	5
2	उर्दु भाषा	3

तालिका–8 में प्रशिक्षण संस्थानो में सेवाकालीन प्रशिक्षण देने के माध्यमो का विवरण दिया है, जिसके अनुसार प्रशिक्षण संस्थानो में हिन्दी माध्यम तथा मदरसा प्रशिक्षण के लिये उर्दु भाषा का उपयोग किया जाता हैं। डाइट गाइड लाइन अनुसार हिन्दी भाषा क्षेत्रीय भाषा व मदरसा शिक्षा के लिये उर्दु भाषा में प्रशिक्षण देने का स्पष्टीकरण दिया गया हैं ।

तालिका–9

सेवाकालीन प्रशिक्षण में भाग न लेने वाले प्रशिक्षको के लिये की गई कार्यवाहियाँ

1	कारण बताओ नोटिस जारी कर कारण जाना जाता है।
2	अगले प्रशिक्षण में सम्मिलित किया जाता है।
3	दूसरा अवसर दिया जाता है।
4	जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा अनुशासनात्मक कार्यवाही कि जाती हैं।
5	जिला शिक्षा केन्द्र के माध्यम से।

तालिका–9 में विभिन्न जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण में संस्थानों में सेवाकालीन प्रशिक्षण में भाग न लेने वाले शिक्षको के लिये की गई कार्यवाहियो का विवरण दिया है, जो शिक्षको पर कि जाती है ,जैसे कारण बताओ नोटिस जारी कर कारण जाना जाता है, अगले प्रशिक्षण में उन्हे सम्मिलित किया जाता है, दूसरा अवसर दिया जाता हैं, व जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा अनुशासनात्मक कार्यवाही कि जाती हैं आदि, डाइट गाइड लाइन के अनुसार सेवाकालीन प्रशिक्षण में भाग न लेने वाले शिक्षको पर जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाती है।

तालिका–10

सेवाकालीन प्रशिक्षण से विकसित दक्षताओ का विकास

क	विकसित दक्षताऐ	जबलपुर डाइट	भोपाल डाइट	सीहोर डाइट	बालाघाट डाइट	सिवनी डाइट	डाइट गाइड लाइन के अनुसार विकसित दक्षताऐ
1	सुनना	√	√	√	√	√	सुनना
2	बोलना	√	√	√	√	√	बोलना
3	लिखना	√	√	√	√	√	लिखना
4	समझना	√	√	√	√	√	समझना
5	गणित संक्रियाऐ	√	√	√	√	√	
6	बालक की मानसिक स्थिति के आधार पर दक्षता प्रदान करना						
7	विषय–गत कमियो का निराकरण						
8	सहायक सामाग्री का प्रयोग करने से व्यक्तिगत कठिनाइयो को दूर करना	√	√	√	√	√	सहायक सामाग्री का प्रयोग करने से व्यक्तिगत कठिनाइयों को दूर करना
9	शिक्षकों के शिक्षकीय कौशल को बढ़ाना	√		√	√		शिक्षको के शिक्षकीय कौशल को बढ़ाना

तालिका–10 में विभिन्न जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानो में सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान विभिन्न दक्षताओ का विकास होता है, जो सभी जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानो में एक समान ही हैं, ये विकसित होने वाली दक्षताऐ डाइट गाइड लाइन के अनुसार ही है सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान शिक्षको में सुनना, बोलना, लिखना, समझना, गणित संक्रियाएँ, बालक की मानसिक स्थिति के आधार पर दक्षता प्रदान करना, विषय–गत कमियो का निराकरण आदि किया जाता हैं।

4.4 प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमो का प्रशिक्षको द्वारा प्राप्त प्रदत्तो का विश्लेषण

तालिका–1

विभिन्न जिला एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षको के अध्यापन विषयों की स्थिति

क्र.	प्रशिक्षकों के अध्यापन विषय	जबलपुर डाइट	भोपाल डाइट	सीहोर डाइट	बालाघाट डाइट	सिवनी डाइट	एन–5	प्रतिशत
1	बाल केन्द्रीय शिक्षा एवं शिक्षा प्रौद्योगिकी							
2	सामा. विज्ञान	√	√	√	√	√	5	100:
3	पर्यावरण विज्ञान	√	√	√	√	√	5	100:
4	बाल मनोविज्ञान							
5	शिक्षा मनोविज्ञान							
6	संस्कृत	√	√	√	√	√	5	100:
7	हिन्दी	√	√	√	√	√	5	100:
8	शिक्षा में प्रबंधन एवं नियोजन							
9	गणित	√	√	√	√	√	5	100:
10	सामान्य विषय							
11	अंग्रेजी	√	√	√	√	√	5	100:
12	ऊर्दू	√	√				2	40:
13	समेकित शिक्षा	√	√	√	√	√	5	100:

उपरोक्त तालिका के अनुसार विभिन्न जिला एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षको के अध्यापन विषयो की स्थिति को दर्शाया गया हैं। जिससे यह स्पष्ट होता हैं, कि जिला एवं प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षको के द्वारा इन विषयों का अध्यापन कराया जाता हैं ये विषय है– बाल केन्द्रीय शिक्षा एवं शिक्षा प्रौद्योगिकी, सामा. विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, बाल मनोविज्ञान, शिक्षा मनोविज्ञान, संस्कृत, हिन्दी, शिक्षा में प्रबंधन एवं नियोजन, गणित, सामान्य विषय, अंग्रेजी, ऊर्दू आदि डाइट गाइड लाइन एवं एन. सी. टी. ई. के पाठ्यक्रमो में इन सभी विषयो का समावेश है।

तालिका–2

प्रशिक्षकों की शैक्षिक योग्यता की स्थिति

क्र.	प्रशिक्षकों की शैक्षिक योग्यता	प्रशिक्षकों की सं.	प्रशिक्षको का–प्रतिशत
1	बी.टी.आई.	2	40
2	स्नातक	11	220
3	बी.एड.	3	60
4	स्नातकोत्तर	11	220
5	एम.एड.	2	40
6	एम. फिल.	0	0
7	पी.एच.डी.	1	20

तालिका–2.1

डाइट गाइड लाइन के अनुसार प्रशिक्षको की शैक्षिक योग्यता की स्थिति

क्र.	पद	प्रशिक्षको की शैक्षिक योग्यता	अनुभव
1	प्राचार्य	स्नातकोत्तर एम ए, एम एस सी स्नातकोत्तर एम एड	10 साल का प्राथमिक स्कूल का अनुभव
2	उपप्राचार्य	स्नातकोत्तर एम ए, एम एस सी स्नातकोत्तर एम एड	5 साल का प्राथमिक स्कूल का अनुभव
3	वरिष्ट अध्यापक	स्नातकोत्तर एम ए, एम एस सी स्नातकोत्तर एम एड	5 साल का प्राथमिक स्कूल का अनुभव
4	अध्यापक	स्नातकोत्तर एम ए, एम एस सी स्नातकोत्तर एम एड	3साल का प्राथमिक स्कूल का अनुभव

तालिका–2 में जिला एवं प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षको कि शैक्षिक योग्यता की स्थिति का विवरण दिया गया हैं। तथा तालिका–2.1 मे डाइट गाइड लाइन के अनुसार प्रशिक्षको की शैक्षिक योग्यता की स्थिति का विवरण दिया गया है किन्तु इस तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि :– बी.टी.आई. – 2, स्नातक – 11, बी.एड. – 3, स्नातकोत्तर – 11, एम.एड. – 3, एम.फिल – 0 , पी.एच.डी. – 8 उपरोक्त पाँच जिला एवं प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षको कि शैक्षिक योग्यता की यह स्थिति है।

तालिका–3

विभिन्न जिला एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षको की स्थिति

क्रमांक	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के नाम	प्रशिक्षको की सं.
1	जबलपुर	24
2	भोपाल	22
3	सीहोर	10
4	बालाघाट	13
5	सिवनी	16

तालिका –3 में यह स्पष्ट किया हैं विभिन्न जिला एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षको की संख्या को दर्शाया गया हैं प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षको की संख्या इस प्रकार है– जबलपुर–24, भोपाल–22, सीहोर–10, बालाघाट–13, सिवनी–16 है।

तालिका–4

विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमो में प्रशिक्षको की व्यवस्था

क्र.	सेवापूर्व व सेवाकालीन कार्यक्रमों में प्रशिक्षकों की व्यवस्था	जबलपुर	भोपाल	सीहोर	बालाघाट	सिवनी	कुल सं.	प्रतिशत
1	स्टाफ सदस्यों तथा शाला के शिक्षको के सहयोग द्वारा	√	√	√	√	√	5	100
2	विषय आधारित	√	√	√	√	√	5	100
3	सेवापूर्व एवं सेवाकालिन प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षकों की व्यवस्था संस्थान द्वारा एवं सेवाकालीन कार्यक्रम		√				1	20
4	बी.आर.सी.बी.ए.सी. जन शिक्षक		√		√		2	40
5	डाइट के प्रशिक्षकों द्वारा	√	√	√	√	√	5	100

तालिका –4 में यह स्पष्ट किया हैं प्रशिक्षण संस्थान में विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमो में प्रशिक्षको की व्यवस्था स्टाफ सदस्यों तथा शाला के शिक्षको के सहयोग द्वारा, विषय आधारित, सेवापूर्व एवं सेवाकालिन प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षको की व्यवस्था संस्थान द्वारा, बी.आर.सी.बी.ए.सी. जन शिक्षक, डाइट के प्रशिक्षको द्वारा कि जाती हैं। डाइट गाइड लाइन के अनुसार विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमो में प्रशिक्षको की व्यवस्था जिला एवं प्रशिक्षण संस्थान के ही विषय विशेषज्ञो द्वारा की जाती है तथा संविदा के आधार पर शिक्षको से सहयोग लिया जाता है।

तालिका–5

विभिन्न जिला एवं प्रशिक्षण संस्थानो में प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान आने वाले व्यवधानो का समाधान

1	छात्रो का सतत् अध्यापन अभ्यास करवाकर
2	मॉनीटर प्रणाली के माध्यम से
3	पाठ्येत्तर गतिविधियो द्वारा
4	स्टॉफ को दो चरणो में विभाजित कर चरणबद्ध

तालिका –5 में यह स्पष्ट किया हैं प्रशिक्षण संस्थानो में विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमो के दौरान आने वाले व्यवधानो का समाधान विभिन्न तरीको ये किया जाता हैं :– छात्रो का सतत् अध्यापन अभ्यास करवाकर, मॉनीटर प्रणाली के माध्यम से, पाठ्येत्तर गतिविधियो द्वारा, स्टॉफ को दो चरणों में विभाजित कर चरणबद्ध करके, विभिन्न जिला एवं प्रशिक्षण संस्थानो में प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान आने वाले व्यवधानो का परिस्थितियो के अनुकूल समाधान किया जाता है, अर्थात् अतिरिक्त प्रशिक्षको की व्यवस्था स्टॉफ के द्वारा करा दी जाती है, जिससे अन्य कार्यक्रमो के साथ–साथ अध्यापन कार्य में व्यवधान उपलब्ध न हो सके।

तालिका–6

अभ्यास शिक्षण द्वारा विकसित होने वाले कौशलों के विकास का विवरण

क्र	विकसित कौशल	जबलपुर डाइट	भोपाल डाइट	सीहोर डाइट	बालाघाट डाइट	सिवनी डाइट	डाइट गाइड लाइन के अनुसार विकसित कौशल
1	सुनना	√	√	√	√	√	सुनना
2	बोलना	√	√	√	√	√	बोलना
3	लिखना	√	√	√	√	√	लिखना
4	समझना	√	√	√	√	√	समझना
5	गणितीय कौशलों का विकास	√	√	√	√	√	गणितीय कौशलों का विकास
6	पाठ्योजना का निर्माण	√	√	√	√	√	पाठ्योजना का निर्माण
7	शिक्षण में अपेक्षित दक्षताओं का विकास	√	√	√	√	√	
8	कक्षा–कक्ष प्रबंधन	√	√	√	√	√	
9	उपकरण निर्माण	√	√	√	√	√	उपकरण निर्माण

तालिका –6 में विभिन्न जिला एवं प्रशिक्षण संस्थानों में अभ्यास शिक्षण द्वारा विकसित होने वाले कौशलों के विकास के विवरण को स्पष्ट किया हैं तथा तालिका–6 में डाइट गाइड लाइन के अनुसार अभ्यास शिक्षण द्वारा विकसित होने वाले कौशलो के विकास के विवरण को स्पष्ट किया हैं जिला एवं प्रशिक्षण संस्थानों में अभ्यास शिक्षण के समय विभिन्न कौशल विकसित होते है जैसे – सुनना, बोलना, लिखना, समझना, गणितीय कौशलों का विकास, पाठ्योजना का निर्माण, शिक्षण में अपेक्षित दक्षताओ का विकास, कक्षा–कक्ष प्रबंधन, उपकरण निर्माण आदि ।

तालिका– 7

प्रशिक्षणार्थियो की उपस्थिति का विवरण

क्र	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के नाम	उपस्थिति का प्रतिशत	अनिवार्य उपस्थिति
1	जबलपुर	82	75
2	भोपाल	80	75
3	सीहोर	90	75
4	बालाघाट	82	75
5	सिवनी	95	75

तालिका –7 में विभिन्न जिला एवं प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणार्थियो की उपस्थिति का विवरण दिया हैः– जबलपुर–82, भोपाल–80, सीहोर–90, बालाघाट–82, सिवनी–95, उपरोक्त पाँच जिला एवं प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणार्थियों की संख्या शत्प्रतिशत बताई गई पर शोधकर्ता द्वारा स्वयं जाकर जब इसका अवलोकन किया तो, शत्–प्रतिशत उपस्थिति किसी भी जिला एवं प्रशिक्षण संस्थानों में नहीं थी।

तालिका–8

प्रशिक्षणार्थियो की नियमित उपस्थिति के लिये अनुशासनात्मक कार्यवाही

क्र.	अनुशासनात्मक कार्यवाही
1	अनुपस्थित रहने पर स्पष्टीकरण के माध्यम से
2	अनुपस्थित की सूचना अभिभावकों को दी जाती है।

तालिका–8 में विभिन्न जिला एवं प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणार्थियो नियमित उपस्थिति के लिये अनुशासनात्मक कार्यवाही के विवरण को स्पष्ट किया हैं जिसमें उनसे अनुपस्थित रहने पर स्पष्टीकरण मांगा जाता है, अनुपस्थिती की सूचना अभिभावको को दी जाती है। प्रशिक्षको द्वारा प्रशिक्षणार्थियो पर नियमित उपस्थिति के लिये उन पर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाती है। जिससे वे हमेशा अध्ययन के लिये आते रहे, पर विभिन्न जिला एवं प्रशिक्षण संस्थानों में अवलोकन के दौरान कुल छात्रो में से आधे ही प्रशिक्षणार्थी नजर आये।

तालिका–9

अभ्यास शिक्षण के पर्यवेक्षण कार्य के समय में कठिनाई बिंदुओ के सुझाव

1	सहायक शिक्षण प्रस्तुति एवं निर्माण में।
2	पाठ्य वस्तु के आधार पर विषयगत।
3	छात्र अनुशासन।
4	समय व्यवस्थापन।
5	पर्यवेक्षकों की संख्या में कमी, शालाओं के शिक्षको का पर्यवेक्षण कार्य में सहयोग लिया जाता है।

तालिका–9 में विभिन्न जिला एवं प्रशिक्षण संस्थानों में अभ्यास शिक्षण के पर्यवेक्षण कार्य के समय में कठिनाई बिंदुओ के सुझावो को स्पष्ट किया हैं, जिसमें सहायक शिक्षण प्रस्तुति एवं निर्माण में, पाठ्य वस्तु के आधार पर विषयगत, छात्र अनुशासन, समय व्यवस्थापन, प्रशिक्षणार्थियो को अभ्यास शिक्षण के समय बहुत सी कठिनाईयाँ आती है, और तब पर्यवेक्षण कार्य के लिये गये, प्रशिक्षको द्वारा उन्हें उनकी कठिनाईयों का समाधान बताया जाता है, ताकि दुबारा परेशानी न हो और अभ्यास शिक्षण प्रभावकारी हो।

तालिका – 10

अभ्यास शिक्षण में प्रशिक्षको द्वारा पर्यवेक्षण कार्य

क	पर्यवेक्षण कार्य
1	निर्धारित बिंदुओं के आधार पर एवं पंचवदी सिद्धांत के अनुसार
2	बच्चों के पीछे खड़े होकर प्रशिक्षणार्थियों का पर्यवेक्षण किया जाता है।
3	विषय आधारित

तालिका–10 के अनुसार प्रशिक्षण संस्थानो में अभ्यास शिक्षण के समय पर्यवेक्षको द्वारा पर्यवेक्षण कार्य निर्धारित बिंदुओ के आधार पर एवं पंचवदी सिद्धांत के अनुसार किया जाता है, बच्चो के पीछे खड़े होकर प्रशिक्षणार्थियो का पर्यवेक्षण 5 या 10 मिनट किया जाता है। जिसमें बच्चो को विषय आधारित सुझाव दिया जाता है।

4.5 प्राथमिक शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमो का प्रशिक्षणार्थियो से प्राप्त प्रदत्तो का विश्लेषण

तालिका 1

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रवेश की प्रक्रिया

वर्तमान स्थिति	प्रशिक्षण संस्थान	डाइट गाइड लाइन के अनुसार प्रवेश की प्रक्रिया
• 10+2 • मेरिट के आधार पर	जबलपुर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान	• 10+2 • मेरिट के आधार पर • विभिन्न संवर्गो के आधार पर
	भोपाल जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान	
	सीहोर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान	
	बालाघाट जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान	
	सिवनी जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान	

तालिका–1 में विभिन्न जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रवेश की प्रक्रिया को स्पष्ट किया गया हैं तथा में डाइट गाइड लाइन के अनुसार प्रवेश की प्रक्रिया को स्पष्ट किया गया हैं जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षणार्थियो का प्रवेश 10+2 के आधार पर किया जाता हैं, जिसमें मेरिट अंको को भी ध्यान में रखा जाता है, विभिन्न संवर्गो के आधार पर भी प्रवेश दिया जाता हैं।

तालिका–2

अभ्यास शिक्षण के समय सहायक सामग्रियो के निर्माण की स्थिति

क्र	सहायक सामग्रियों के निर्माण की स्थिति	डाइट गाइड लाइन के अनुसार सहायक सामाग्रीयों के निर्माण की स्थिति
1	चार्ट	चार्ट
2	मॉडल	मॉडल
3	चित्र	चित्र
4	कंकड़,पत्थर	रंगीन चॉक
5	अनाज के बीज	टी.एल.एम.
6	माचिस की तीलीयाँ	

तालिका–2 में विभिन्न जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों अभ्यास शिक्षण के समय सहायक सामाग्रीयो के निर्माण की स्थिति को स्पष्ट किया हैं। तथा डाइट गाइड लाइन के अनुसार भी अभ्यास शिक्षण के समय सहायक सामाग्रीयो के निर्माण की स्थिति को स्पष्ट किया हैं। सामाग्रीयो के निर्माण में विभिन्न जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानो में डाइट गाइड लाइन के अनुसार अभ्यास

शिक्षण में सहायक सामाग्रीयों का निर्माण कराया जाता हैं। जिसे वर्तमान में भी लागू किया जा रहा है।

तालिका–3

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में शैक्षिक भ्रमण की स्थिति

क	प्रशिक्षण संस्थान	शैक्षिक भ्रमण	डाइट गाइड लाइन के अनुसार शैक्षिक भ्रमण की स्थिति	एन. सी. टी. ई. अनुसार शैक्षिक भ्रमण की स्थिति
1	जबलपुर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान	√	√ शैक्षिक भ्रमण	√ शैक्षिक भ्रमण
2	भोपाल जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान	√		
3	सीहोर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान	√		
4	बालाघाट जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान	√		
5	सिवनी जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान	√		

तालिका–3 से यह स्पष्ट किया है, विभिन्न जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में शैक्षिक भ्रमण की स्थिति सभी जगह एक जैसी है, तथा में डाइट गाइड लाइन व एन. सी. टी. ई. के अनुसार शैक्षिक भ्रमण की स्थिति को स्पष्ट किया है, लेकिन वास्तव मैं किसी भी जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में में शैक्षिक भ्रमण की स्थिति समान नही है, कहीं ले जाया जाता, और कही नहीं ले जाया जाता, जबकि डाइट गाइड लाइन व एन. सी. टी. ई. में प्रशिक्षणार्थियो को प्रशिक्षण अवधि के दौरान शैक्षिक भ्रमण को प्रभावी रूप से स्पष्ट किया गया है।

तालिका–4

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में शैक्षिक सुविधाओ की स्थिति

क	शैक्षिक सुविधाऐ	जबलपुर डाइट	भोपाल डाइट	सीहोर डाइट	बालाघाट डाइट	सिवनी डाइट	डाइट गाइड लाइन के अनुसार शैक्षिक सुविधाओ की स्थिति
1	बस सेवा						लाइब्रेरी सुविधा
2	कम्प्यूटर सेवा	√	√				चिकित्सा सुविधा
3	लाइब्रेरी सुविधा	√	√	√	√	√	आवास सुविधा
4	चिकित्सा सुविधा	√	√	√	√	√	भोजन सुविधा
5	आवास सुविधा	√	√	√	√	√	कम्प्यूटर सेवा
6	भोजन सुविधा	√	√	√	√	√	

तालिका–4 में विभिन्न जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में शैक्षिक सुविधाओ की स्थिति को स्पष्ट किया है तथा डाइट गाइड लाइन के अनुसार शैक्षिक सुविधाओं की स्थिति को स्पष्ट किया है डाइट गाइड लाइन में शैक्षिक सुविधाओ के विषय में जानकारी दी गई है, जैसे भौतिक सुविधा, लाइब्रेरी सुविधा, आवास सुविधा आदि। राज्य सरकारो द्वारा जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में शैक्षिक सुविधाऐं दी गई हैं, जैसे बस सेवा, कम्प्यूटर सेवा, लाइब्रेरी सुविधा, चिकित्सा सुविधा, आवास सुविधा, भोजन सुविधा आदि, होता है। लेकिन वास्तव मैं किसी भी जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणार्थियो को सारी शैक्षिक सुविधाये रहते हुए भी नहीं मिल पाती है।

4.6 प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्राचार्य व प्रशिक्षको एवं प्रशिक्षणार्थियों से सम्मिलित रूप से प्राप्त प्रदत्तो का विश्लेषण

तालिका– 1

जिला प्रशिक्षण संस्थानों में वर्तमान में आयोजित होने वाले कार्यकमों स्थिति

क्र.	कार्यक्रम	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान					डाइट गाइड लाइन के अनुसार कार्यक्रम
		1	2	3	4	5	
1	डी.एड. द्विवर्षीय नियमित प्रशिक्षण	√	√	√	√	√	सेवापूर्व शिक्षक –प्रशिक्षण कार्यक्रम
2	पत्राचार प्रशिक्षण	√	√	√	√	√	सेवाकालीन शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम
3	शाला मॉनिटरिंग	√	√	√	√	√	प्रौढ़ शिक्षा व अनौपचारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम
4	सेवापूर्व एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण	√	√	√	√	√	क्षेत्र अध्ययन क्रियात्मक अनुसंधान
5	शोध कार्य						डी.बी.ई. व वी.ई.सी. के सदस्यों के लिये ओरियेन्टेशन कार्यक्रम
6	पाठ्यक्रम पुर्नरीक्षण कार्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक की समीक्षा	√	√	√	√	√	
7	प्रश्न–पत्र निर्माण						
8	1से8वी तक परीक्षा संचालन एवं परीक्षाफल विश्लेषण	√	√	√	√	√	
9	ऑपरेशन क्वालिटी प्रशिक्षण	√	√	√	√	√	
10	दीदीयों एवं स्वयं सेवकों का प्रशिक्षण						
11	राज्य शिक्षा केन्द्र के सभी कार्यक्रम	√	√	√	√	√	
12	इनडक्शन प्रशिक्षण नये शिक्षकों के लिये	√	√	√	√	√	
13	मदरसा प्रशिक्षण	√	√	√	√	√	
14	टेलीकान्फेन्सी						

क्र.	कार्यक्रम	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान					डाइट गाइड लाइन के अनुसार कार्यक्रम
		1	2	3	4	5	
15	ब्रिजकोर्स						
16	बीआरसी,बीएएल तथा जन शिक्षकों का परीक्षण						
17	गणित एवं विज्ञान, अंग्रेजी प्रशिक्षण	√	√	√	√	√	
18	आईईडीसी प्रशिक्षण						
19	समेकित शिक्षा	√	√	√	√	√	

तालिका–1 से यह स्पष्ट किया हैं, कि वर्तमान समय में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये जाते है, जैसे :– डी.एड. द्विवर्षीय नियमित प्रशिक्षण, पत्राचार प्रशिक्षण, शाला मॉनिटरिंग, सेवापूर्व एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण, शोध कार्य, पाठ्यक्रम पुर्नरीक्षण कार्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक की समीक्षा, प्रश्न–पत्र निर्माण, 1से8वी तक परीक्षा संचालन एवं परीक्षाफल विश्लेषण, ऑपरेशन क्वालिटी प्रशिक्षण, दीदीयों एवं स्वयं सेवकों का प्रशिक्षण, राज्य शिक्षा केन्द्र के सभी कार्यक्रम, इनडक्शन प्रशिक्षण नये शिक्षकों के लिये, मदरसा प्रशिक्षण, टेलीकान्फ्रेन्सिंग, ब्रिजकोर्स, बीआरसी, बीएएल तथा जन शिक्षकों का परीक्षण, गणित एवं विज्ञान, अंग्रेजी प्रशिक्षण, आईईडीसी प्रशिक्षण, समेकित शिक्षा, आदि । इन सभी कार्यक्रमों का संचालन डाइट गाइड लाइन के अनुसार किया जाता है

तालिका– 2
प्रशिक्षण की अध्यापन विधियाँ

क	प्रशिक्षण की विधियां	जबलपुर डाइट	भोपाल डाइट	सीहोर डाइट	बालाघाट डाइट	सिवनी डाइट	प्रतिशत	डाइट गाइड लाइन के अनुसर प्रशिक्षण का अध्यापन विधियां
1	गतिविधि–आधारित अध्यापन	√	√	√	√	√	100	बाल केन्द्रित विधियों द्वारा
2	बाल केन्द्रित विधियों द्वारा							प्रश्नोत्तर विधि
3	प्रश्नोत्तर विधि	√	√	√	√	√	100	व्याख्यान विधि
4	व्याख्यान विधि	√	√	√	√	√	100	अभिनय विधि
5	प्रत्यक्ष विधि							गतिविधि–आधारित अध्यापन
6	अभिनय विधि							प्रत्यक्ष विधि

क्र	प्रशिक्षण की विधियां	जबलपुर डाइट	भोपाल डाइट	सीहोर डाइट	बालाघाट डाइट	सिवनी डाइट	प्रतिशत	डाइट गाइड लाइन के अनुसर प्रशिक्षण का अध्यापन विधियां
7	भाषा की सभी विधियों द्वारा	√	√	√	√	√	100	
8	सहायक सामाग्रीयों द्वारा	√	√	√	√	√	100	
9	आगमन विधि							
10	निगमन विधि							

उपरोक्त तालिका द्वारा में यह स्पष्ट किया हैं, कि विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण अलग-अलग विधियों से दिया जाता हैं। ये प्रशिक्षण विधियाँ इस प्रकार हैं :-गतिविधि-आधारित अध्यापन, बाल केन्द्रित विधियों द्वारा, प्रश्नोत्तर विधि, व्याख्यान विधि, प्रत्यक्ष विधि, अभिनय विधि, भाषा की सभी विधियों द्वारा, सहायक सामाग्रीयों द्वारा, आगमन विधि, निगमन विधि, डाइट गाइड लाइन के अनुसार विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों व्याख्यान विधि व प्रश्नोत्तर विधि एवं गतिविधि-आधारित अध्यापन कार्य ही कराया जाता है, पर अधिकतर व्याख्यान विधि का ही उपयोग किया जाता है।

तालिका-4
प्रतिदिन लगने वाली कक्षाओं की स्थिति

कक्षायें	संख्या	डाइट संख्या	प्रतिशत
सैद्धांतिक	6	5	100
प्रायोगिक	1	5	100
व्यवसायिक		**2**	100

प्रशिक्षण संस्थानों में प्रतिदिन छः सैद्धांतिक व एक प्रायोगिक कक्षायें लगती है। व्यावसायिक कक्षाओं की सही जानकारी नही मिल सकी , तालिका-4 प्रतिदिन लगने वाली कक्षाओं की स्थिति का विवरण दिया गया हैं।

तालिका–5
सहायक सामाग्री के उपयोग की स्थिति

क्र.	सहायक सामाग्री	जबलपुर	भोपाल	सीहोर	बालाघाट	सिवनी	प्रतिशत	डाइट गाइड लाइन के अनुसार सहायक सामाग्री	एन.सी.टी.ई. के अनुसार सहायक सामाग्री
1	चार्ट	√	√	√	√	√	100	आडियो–विडियो ऐड	आडियो – वीडियो ऐड
2	पोस्टर	√	√		√		60	शिक्षा के लिये यंत्र–दृश्य कला	मॉडल
3	टेप रिकार्डर	√	√		√		60	पोस्टर	उपाचारात्मक शिक्षण
4	स्लाइड प्रदर्शन	√		√		√	60	मॉडल	
5	मॉडल	√	√	√	√	√	100	एलटीएम	
6	प्रोजेक्टर	√	√				40	स्लाइड प्रदर्शन	
7	मानचित्र	√	√	√	√	√	100		
8	अंक बोर्ड	√	√	√	√	√	100		
9	चॉक/डस्टर (रंगीन)	√	√	√	√	√	100		

उपरोक्त तालिका में प्रशिक्षण संस्थानों में प्रतिदिन प्रशिक्षण के समय विभिन्न अलग–अलग तरह की सहायक सामाग्री उपयोग की जाती है जैसे :– चार्ट, पोस्टर, टेप रिकार्डर, स्लाइड प्रदर्शन, मॉडल, प्रोजेक्टर, आदि । इसी प्रकार डाइट गाइड लाइन व एन. सी. टी. ई. के अनुसार :– आडियो–विडियो, शिक्षा के लिये यंत्र–दृश्य कला, टी.एल.एम., व उपाचारात्मक शिक्षण में सहायक सामाग्रीयो का उपयोग किया जाता है। प्रशिक्षण संस्थानों में सम्मिलित रूप से विभिन्न सहायक सामाग्री उपयोग किया जाता है

तालिका–6
अभ्यास शिक्षण का विवरण

आयोजित अभ्यास शिक्षण की संख्या	डाइट गाइड लाइन के अनुसार अभ्यास शिक्षण की संख्या	एन.सी.टी.ई. के अनुसार अभ्यास शिक्षण की संख्या
40	40	60

उपरोक्त तालिका में प्रशिक्षण संस्थानों में अभ्यास शिक्षण का विवरण का विवरण दिया गया हैं।

जिसमें प्रशिक्षण संस्थानों में चालीस अभ्यास शिक्षण कराये जाते हैं। एन. सी. टी. ई. के अनुसार साठ अभ्यास शिक्षण की जानकारी दी गई हैं। पर वास्तव में इसका पालन नहीं किया जा रहा है।

तालिका–7
अभ्यास शिक्षण के विषय

डाइट के नाम	डी.एड. प्रथम वर्ष		डी.एड. द्वितीय वर्ष			
	हिन्दी	गणित	अंग्रेजी	संस्कृत	विज्ञान	सामा. विज्ञान
जबलपुर,	√	√	√	√	√	√
भोपाल	√	√	√	√	√	√
सीहोर	√	√	√	√	√	√
बालाघाट	√	√	√	√	√	√
सिवनी	√	√	√	√	√	√

तालिका 7 के अनुसार अभ्यास शिक्षण के विषयो की स्थिति का विवरण दिया गया हैं। प्रशिक्षण संस्थानों में डी.एड. प्रथम वर्ष व डी.एड. द्वितीय वर्ष में हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दु, विज्ञान व सामा. विज्ञान के अभ्यास शिक्षण करवाए जाते हैं। डाइट गाइड लाइन के अनुसार विद्यालयीय विषयो में इन सभी का समावेश रहता हैं।

तालिका–8

आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन का विवरण

क्रमांक	मूल्यांकन	स्थिति	मूल्यांकन का अंकन
1	डाइट प्राचार्य द्वारा	आंतरिक	25 अंक
2	बाह्य परीक्षकों द्वारा	बाह्य	75 अंक

उपरोक्त तालिका के अनुसार विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों में सैद्धांतिक विषयों में आंतरिक मूल्यांकन हेतु 25 अंक व बाह्य मूल्यांकन हेतु 75 अंक होते हैं। आंतरिक मूल्यांकन का कार्य प्रशिक्षण संस्थान के प्राचार्य की देखरेख में व्याख्याताओ द्वारा एवं बाह्य मूल्यांकन का कार्य माध्यमिक शिक्षा मंडल के द्वारा किया जाता है।

तालिका–9
सैद्धांतिक विषयो की स्थिति

क्र.	सैद्धांतिक विषय	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान						प्रतिशत	डाइट गाइड लाइन के अनुसार	एन.सी.टी.ई. के अनुसार सैद्धांतिक विषय
		1	2	3	4	5	कुल			
1	भारतीय पाश्चात्य शिक्षाविद्/दार्शनिकों के शैक्षिक विचार	√	√	√	√	√	5	100	विशेष बालको कि शिक्षा	प्राथमिक शिक्षा की स्थिति, सिद्धांत एवं समस्या
2	उदीयमान भारतीय समाज एवं प्राथमिक शिक्षा	√	√	√	√	√	5	100	संस्थगत नियोजन	उदीयमान भारतीय समाज एवं प्राथमिक शिक्षा
3	शांति शिक्षा, सामाजिक सद्भाव								शिक्षा तकनीकी	भारतीय पाश्चात्य शिक्षाविद्/दार्शनिकों के शैक्षिक विचार
4	पर्यावरणीय शिक्ष	√	√	√	√	√	5	100	सतत मूल्याकंन	सीखने–सिखाने का मनोविज्ञान
5	बाल मनोवैज्ञानिक	√	√	√	√	√	5	100	कार्यानुभव	बाल मनोविज्ञान
6	शिक्षा का समाज शास्त्र एवं संस्कृति								मल्टीग्रेट शिक्षण	शिक्षा का समाज शास्त्र एवं संस्कृति
7	प्रा. शिक्षा के समेकित दृष्टिकोण	√	√	√	√		4	80		प्रा. शिक्षा के समेकित दृष्टिकोण
8	मातृभाषा एवं प्रादेशिक भाषाओं का शिक्षण	√	√	√	√	√	5	100	प्रबंधन एवं नियोजन	शांति शिक्षा, सामाजिक सद्भाव
9	प्रारंभिक शिक्षा में मूल्यांकन	√	√	√	√	√	5	100		पर्यावरणीय शिक्षा
10	समेकित शिक्षा	√	√	√	√	√	5	100		दूसरे देशों में प्रारंभिक शिक्षा
11	पोषण और संतुलित आहार	√	√	√	√	√	5	100		पोषण और संतुलित आहार
12	मार्गदर्शन एवं परामर्श			√	√		2	40		आपदा–प्रबंधन एवं सुरक्षा शिक्षा

क्र.	सैद्धांतिक विषय	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान						प्रतिशत	डाइट गाइड लाइन के अनुसार	एन.सी.टी.ई. के अनुसार सैद्धांतिक विषय
		1	2	3	4	5	कुल			
13	विद्यालय विषयों का शैक्षणिक विश्लेषण	√	√			√	3	60		मातृभाषा एवं प्रादेशिक भाषाओं का शिक्षण
14	प्रा. शिक्षा में प्रबंधन, वित्तीकरण एवं नियोजन	√	√	√	√		4	80		प्रारंभिक शिक्षा में मूल्यांकन
15	स्वास्थ्य स्वच्छता जीने की कला एवं शारीरिक शिक्षा	√	√	√	√	√	5	100		मार्गदर्शन एवं परामर्श
16	गणित	√	√	√	√	√	5	100		सौंदर्य शिक्षा
17	सामा. विज्ञान	√	√	√	√	√	5	100		समेकित शिक्षा
18	विज्ञान	√	√	√	√	√	5	100		जीवन जीने की कला
19	संस्कृत	√	√	√	√	√	5	100		विद्यालयी विषयों का शैक्षणिक विश्लेषण
20	उर्दु	√	√	√	√	√	5	100		प्रा. शिक्षा में प्रबंधन; वित्तीकरण एवं नियोजन
21	अंग्रेजी	√	√	√	√	√	5	100		स्वास्थ्य स्वच्छता जीने की कला एवं शारीरिक शिक्षा

उपरोक्त तालिका के अनुसार विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों में सैद्धांतिक विषयो के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा की स्थिति सिद्धांत एवं समस्याएं, उदीयमान भारतीय समाज एवं प्राथमिक शिक्षा, भारतीय पाश्चात्य शिक्षाविद्/दार्शनिकों के शैक्षिक विचार, सीखने-सीखाने का मनोविज्ञान, बाल मनोविज्ञान, शिक्षा का समाज शास्त्र एवं संस्कृति, प्रा. शिक्षा के समेकित दृष्टिकोण, शांति शिक्षा, सामाजिक सद्भाव, पर्यावरणीय शिक्षा

दूसरे देशों में प्रारंभिक शिक्षा, पोषण और संतुलित आहार, आपदा–प्रबंधन एवं सुरक्षा शिक्षा, मातृभाषा एवं प्रादेशिक भाषाओं का शिक्षण, प्रारंभिक शिक्षा में मूल्यांकन, मार्गदर्शन एवं परामर्श, सौंदर्य शिक्षा, समेकित शिक्षा, जीवन जीने की कला, विद्यालय विषयो का शैक्षणिक विश्लेषण, प्रा. शिक्षा में प्रबंधन, वित्तीकरण एवं नियोजन, स्वास्थ्य स्वच्छता जीने की कला एवं शारीरिक शिक्षा, गणित, सामा. विज्ञान, विज्ञान, संस्कृत, उर्दु, अंग्रेजी, में प्रशिक्षण संस्थानों में जो सैद्धांतिक विषय पढ़ाये जाते है। वे सभी डाइट गाइड लाइन व एन. सी. टी. ई. के पाठ्यक्रमों में दिये हुये है तथा उन्हें सम्मिलित रूप से प्रशिक्षण संस्थानों में लागू किया जाता है।

तालिका–10
प्रायोगिक विषयो की स्थिति

क्र.	प्रायोगिक विषयो की स्थिति	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान					डाइट गाइड लाइन के अनुसार प्रायोगिक विषयों की स्थिति	एन.सी.टी.ई. के अनुसार प्रायोगिक विषयों की स्थिति
		1	2	3	4	5		
1	स्कूल का सौन्दर्यीकरण	√	√	√	√	√	योगा एवं शारीरिक शिक्षा	एक सेमेस्टर की अवधि हेतु प्राथमिक विद्यालय में प्रशिक्षण
2	छात्र की सफाई एवं निजी स्वच्छता	√	√	√	√	√	पाठ्य सहगामी क्रियाएँ	संप्रेषण कौशल मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषा तथा विदेशी भाषा
3	प्रश्न पत्र तैयार करना	√	√	√	√	√	टी. एल. एम. का निर्माण	60 पर्यवेक्षिक पाठों का व्याख्यान
4	वृक्षारोपण एवं जल संरक्षण	√	√	√	√	√	क्षेत्र अध्ययन क्रियात्मक अनुसंधान	वृक्षारोपण एवं जल संरक्षण
5							पाठ्य पुस्तकों का एवं पाठ्यक्रम का निर्माण करना	ऊर्जा संरक्षण
6	उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन	√	√	√	√	√		मृदा और चारागाह प्रबंधन
7	स्थानीय त्यौहारों का आयोजन							स्थानीय त्यौहारों का आयोजन
8	कार्यानुभव	√	√	√	√	√		विचार–विनिमय
9	खेलकूदों का आयोजन	√	√	√	√	√		आपदा–प्रबंधन और सुरक्षा शिक्षा

क्र.	प्रायोगिक विषयो की स्थिति	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान					डाइट गाइड लाइन के अनुसार प्रायोगिक विषयों की स्थिति	एन.सी.टी.ई. के अनुसार प्रायोगिक विषयों की स्थिति
		1	2	3	4	5		
10	विचार–विनिमय							स्काउट और बालिका गाइडिंग
11	परीक्षाफल तैयार करना	√	√	√	√	√		क्रियात्मक अनुसंधान प्रकरण
12	स्काउट और बालिका गाइडिंग	√	√	√	√	√		प्रक्षेत्रीय कार्य
13	क्रियात्मक अनुसंधान प्रकरण	√	√	√	√	√		स्वयं को व्यक्त करने की गतिविधियां
14	विद्यालय और छात्रों के प्रलेखों का रख–रखाव							स्थानीय मेले एवं ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण
15	स्वयं को व्यक्त करने की गतिविधियां							प्राकृतिक अध्ययन
17	स्थानीय मेले एवं ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण	√	√	√	√	√		स्कूल का सौन्दर्यीकरण
18	प्राकृतिक अध्ययन							छात्र की सफाई एवं निजी स्वच्छता
19								उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन
20								परीक्षाफल तैयार करना
21								विद्यालय और छात्रों के प्रलेखों का रख–रखाव
22								प्रश्न पत्र तैयार करना

उपरोक्त तालिका के अनुसार विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों में प्रायोगिक विषयो के अंतर्गत में प्रायोगिक गतिविधियां कराई जाती है। जिनमें वृक्षारोपण एवं जल संरक्षण, स्थानीय त्यौहारों का आयोजन, कार्यानुभव, खेलकूदों का आयोजन, विचार-विनिमय, स्काउट और बालिका गाइडिंग, क्रियात्मक अनुसंधान प्रकरण, स्वयं को व्यक्त करने की गतिविधियां, स्थानीय मेले एवं ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण, प्राकृतिक अध्ययन, स्कूल का सौन्दर्यीकरण, छात्र की सफाई एवं निजी स्वच्छता, योगा, उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन, परीक्षाफल तैयार करना, विद्यालय और छात्रों के प्रलेखों का रख-रखाव, प्रश्न पत्र तैयार करना, आदि। डाइट गाइड लाइन व एन. सी. टी. ई. के अनुसार जो प्रायोगिक गतिविधियां बताई गई है उनका मिलाजुला रूप प्रायोगिक गतिविधियों के रूप में प्रशिक्षण संस्थानों में सम्पन्न कराया जाता है।